e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 3, March 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.423

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

लोक साहित्य में विरहाभिव्यक्ति

Mukesh Parmar

M.A, Department of Hindi, NET, Gudamalani, Barmer, Rajasthan, India

सार: भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की मानवीय लालसा ने विभिन्न माध्यमों को जन्म दिया। लेखन, संगीत तथा विभिन्न प्रकार-की कलाएँ इन्हीं माध्यमों में से थीं। अपने मनोभावों , विचारों तथा समस्याओं को अभिव्यक्त करने के लिए लेखन कला एक सशक्त माध्यम के रुप में विकसित हुई। प्राचीन काल से वर्तमान काल तक की यात्रा में भारतवर्ष तथा विश्व के अन्य देशों में ऐसे असंख्य लेखक हुए हैं , जिन्होंने अनेक विषयों को आधार बनाकर साहित्य रचना में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

भारतीय साहित्यकार शुरु से ही विश्व साहित्य के क्षेत्र में उच्च स्थान पर रहे हैं। रुहेलखण्ड क्षेत्र भी साहित्य के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। रुहेलखण्ड में ऐसे अनेक साहित्यकार हुए हैं, जिन्होंने विविध विषयों पर साहित्य की रचना की है।

I. परिचय

इन साहित्यकारों का परिचय इस प्रकार हैं--
1. बच्चू "सूर"
2. भक्त कवयित्री कृष्णाप्यारी "दासी"
3. पं० राधेश्याम कथावाचक
4. पं० झब्बीलाल मिश्र "हकीर"
5. पं०नारायण दास पाराशरी "शोला"
6. लाल दास
7. पं० जागेश्वर प्रसाद[1,2,3]
8. पं० छोटे लाल दीक्षित
9. श्री मन्नारायण

1. बच्चू "सूर"

अब से लगभग 50 वर्षों पूर्व पीलीभीत जिसे के जमुनियां ग्राम के निवासी पंडित बच्चू लाल आयु कवि " बच्चू सूर " के नाम से प्रसिद्ध थे।हाँलाकि उस समय कवि सम्मेलनों का अधिक प्रचार नहीं हुआ था, परन्तु आर्य समाज और सनातन धर्म संस्थाओं के आयोजन प्राय: अनेक स्थानों पर होते रहते थे। इन धर्म सभाओं में बच्चू सूर की कविताओं का एक पृथक कार्यक्रम रखा जाता था। बच्चू श्रोताओं की छोटी से छोटी समस्या की पूर्ति बड़ी आसानी से करते थे। बच्चू सूर जनता के कवि थे। उन्होंने अपना परिचय निम्न प्रकार से दिया है-

"खीरी जिला विच वास करे हम,मैगलगंज में पोष्ट विचारो।
नम्र को नाम जमुनियां है,तेहि मध्य में राजत धाम हमारो।
ब्राह्मण वंश में जन्म लियो शुचि छन्दन को रस प्राण से प्यारे।
सूरजी सत्य ही कहो मम यही पता हिय बीच में धरो।

एक बार उन्होंने नागरी शब्द की पूर्ति करने को दी गयी। इस पर सूर जी ने एक हरि गीतिका छंद बनाकर सुनाया।[4,5,6]

"जेही मध्य है श्रुति चार जिनमें सुभग ध्वनी अमृत भरी।
है जिती विद्या अन्य देशन सकल मध्य उजागरी।
सो धरहु चित में पढ़हु याको सकल उपभो भरी।
कवि सूर बच्चू मति बिसारो मातृ भाषा नागरी।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

सूर जी किसी भी समस्या का समाधान अपनी भाषा में बहुत आसानी से कहा करते थे।एक प्रशन कि चकोर जब-जब चन्द्र के भ्रम में अंगार खाने लगता है, तब उसकी जीभ और चोंच जल जाती होगी; फिर भी वह इस लगन को नहीं छोड़ पाता।इसका क्या कारण है? सूर जी ने इस का उत्तर घनाक्षरी छंद में इस प्रकार दिया -

हम बासें भूमि पर हमारो मित्र अकाश,
हाम जन्द्र मित्र से मिलन न पायेगें।
यासे वन्हि चिनगी चबाय चारु चोंचन से
अपने शरीर से भ बनायेंगे।
बास कैहास तजि आवैं शम्भु भूमि तल,
मेरी भ हाथ लेकर सुतन लगायेंगे।
शम्भू के सुभाल बीच सोहत विशाल विधु,
भ ही होके मित्र तन लिपटायेगें।

प्रेम की प्रशंसा करने के लिए सूर जी ने बहुत ही भावुक पंक्तियों का प्रयोग किया है। एक व्याघ्र वन में वीणा बजाकर एक मृग को मोह लेता है। मृग वीणा की ध्वनी से इतना मंत्र- मुग्ध हो जाता है कि व्याध के तीर से मार दिया जाता है। मृग मरने से पूर्व एक याचना करता है कि "हे व्याध एक बार वीणा की मधुर झंकार सुना दो।[7,8,9]" सर्वेया घनाक्षरी के माध्यम से श्री बच्चू सूर जी ने अपनी इस बात को बड़ी सहजता के साथ कह दिया --

"उत्तम कानन् पाय भली विधि व्याध ने जाय के वीणा बनाई,
प्रेम में नभ के भूलि गयो मृग ताने सुनै लगो कान लगाई।
वीणा बजावत ही धुनु तीनि क् तीर हन्यो उर लक्ष्य बनाई,
लागें विषंग कुरंग गिरेऊ महि व्याधि से दीन गिरा प्रकचटाई।"

"अमिष हितार्थ तैने लीने हमारे प्राण मांस बनवारी परिवारिन खिलाय दे।
मेरे सर श्रृंगन की अवश्य श्रंगी नाद करि मेरो तन धर्म ब्रहमचारिन गहाय दे।
ऐरे मित्र व्याध करबद्ध प्रार्थना है एक मेरी अभिलाषा यह ततक्षण पुराय दें।
जौन वीणा काज मैने आज आय दीन्हे प्राण मरत हूँ एक बार वीणा को बजाये दे।"

प्रकृति वर्णन के छन्द भी सूर जी ने रचे। बसन्त का छन्द, जिसमें श्याम बन माली की प्रतीक्षा में एक गोपी अपने दु:ख का वर्णन कर रही है, इस प्रकार है -

"आली बनमाली दिन मदन क्रुचाली यह,
करत विघती तन मेरो दीन्त है।
श्याम गयो श्याम गयो, सुखद विश्राम गयो,
सुखमय आराम गयो, दु:ख प्रगटन्त है।।
और ऋतु आबई, पियराई छोई ऐसे झूठ
मैं भी पियराई बैठि रोवत एकान्त है।
कुंज बसन्त में सुआती नाहिं कान्त हैं।

2 . भक्त कवियत्री कृष्णाप्यारी "दासी' :

19 वीं शती के अंतिम दशकों में इस कवियत्री ने संभल के एक प्रतिष्ठित और धनी सक्सेना (कायस्थ) परिवार में जन्म लिया था। इन्होंने अधिकांश भजनों में स्वयं के लिए "कृष्णा दासी" नाम का प्रयोग किया है। कवियत्री ने दो दोहों में अपना परिचय इस प्रकार दिया है -

"मैहर संभल नगर में, कोल शहर ससुराल
वर बृजमोहन लाल से दमेअशिव त्रिपुरार
पुत्री मिट्ठन लाल की कृष्णा प्यारी नाम
भागनी हीरा लाल की सविनय करति प्रणाम्।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

कवियत्री कृष्णा प्यारी की एक पुस्तक "प्रेम रस मंजीर" तीन संस्करणों में छपी है। इसमें 85 भजन और होली आदि का संग्रह है।[10,11,12] उन्होंने लोक शैली में "भजन-रामायण"और "रामकथा' को लेकर अनेक पद रचे हैं।

कवियत्री ने विविध छंदों में अपनी भक्ति भावना को प्रस्तुत किया है, इसके उदाहरण हैं-

वंदना गणेशः

ऋद्धि सिद्धि सागर गुणज्ञान बुद्धि आगर
त्रैलोंक में उजागर तुम नाशत भ्रम भारी है
मंगल शुभकरण हार विध्न के हरन हार
दाता उदार सोतो हारयो भंडारी है
सेवत ऋद्धि सिद्धि सार ठाढ़े मुनिदेव द्वार
महिमा अपार आदि वेदन उचारी है
आनंद के कन्दन पड़े पुष्प धुप चन्दन
ऐसे पार्वती के नंन्दन को वन्दना हमारी है।

चेतावनी :

जिस गाड़ी में जाना तुमको
एक पल छिन में वो आती है।
कुछ देर नहीं बाँधे बिस्तर
घंटी उपदेश सुनाती है।
कर संट और अंजन गरजत
धर-धर जियरा मोरा लरजत है[13,14]
कर्क-तर्क वतन उस देश चली
जहाँ से नहीं आने पाती है
जिस गाड़ी में जाना तुमको
एक पल छिन में वो आती है।

3 . पंडित राधेश्याम कथावाचक :

पंडित राधेश्याम कथा वाचक अपनी बाल्यावस्था में अपने पिता के साथ जगह-जगह कथा करने जाते थे। कथावाचक जी जब लगभग आठ वर्ष के थे, तब एक बार अपने पिता के साथ "रुक्मणी मंगल कथा" कहने चन्दौसी गये। इस कथा के बीच-बीच में उन्होंने अपने कुछ स्वरचित गीत भी गाये, जिनको चन्दौसी की जनता ने बहुत पसंद किया। फलस्वरुप राधेश्याम जी जब बरेली वापस आये, तो उन्होंने नाटकों के गाने की तर्ज पर अनेकों भजन बना डाले। इसी मध्यान्तर में रामकथा के कई अंशों पर कथावाचक जी ने स्वरचित छन्दों को निरुपित किया, जिन्हें रुकमणी की मंगल कथा के बीच में गाया जाता था। इन्हीं छन्दों को राधेश्यामी छन्द कहा जाने लगा। छन्दों की लोकप्रियता को देखते हुये सम्पूर्ण रामायण की रचना की गयी।

राधेश्यामी छन्द मात्र पंडित राधेश्याम कथावाचक तक ही सीमित न रहे, राधेश्यामी छन्दों की लोकप्रियता को देखते हुये अन्य समकालीन बुद्धिजीवियों ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। इनमें बनारस के माधव शुक्ल जी, बरेली के निवासी रामसहाय "तमन्ना", चन्दौसी के "रामरुप', पीलीभीत के ज्वाला प्रसाद, राधेश्याम कथावाचक के अनुज मदन मोहन शर्मा इत्यादि कवियों के नाम प्रमुख रुप से आते हैं। इनमें माधव शुक्ल जी ने सम्पूर्ण महाभारत का राधेश्यामी छन्दों में अनुवाद प्रस्तुत किया।

राम सहाय "तमन्ना" ने ध्रुव चरित्र की रचना राधेश्यामी छन्दों में की। इनकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

"कारण क्या आज चाँदनी में, इस भाँति मलिनता मिलती है,
आश्चर्य दिवाकर प्रस्तुत है, फिर भी न कमलिनी खिलती है,
आँखों को सुख देने वाली, आँखें क्यों विकल हो रही हैं,
काजल से कजराली काली, क्यों जल से सजल हो रही हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

चन्दौसी निवासी लाला रामस्वरुप ने भी श्री राधेश्यामी छंदों में सम्पूर्ण महाभारत को प्रस्तुत किया है। इसमें इनके द्वारा रचित "कीचक बध" प्रसंग बहुत ही प्रशंसनीय रहा है-

"दे दिया हुक्म मैमारों को एक नाच भवन सजवाने को।
कन्डील लैम्प फानूश झाड़ बिजली लाईट, लटकाने को।
सेदरी दुबारी चौबारे सब रंग रंगीले रंगवाय।
हर किस्म-कि के कमरों में कालीन मखमली बिछवाये।

पीलीभीत के ज्वाला प्रसाद कवि ने राधश्यामी छंदों में "महिषापुर बध" की रचना की-

"संसार एक मायामय की, माया का दृश्य दिखाता है।
जिसमें पड़ ज्ञान-वान नर भी, मूरख सा चक्कर खाता है।
है देवि महामाया हरि की, जो सृष्टि जगत की करता है।
फिर पालन उसका करके बह, अपने ही में लय करती है।
संसार उसी की माया में, पड़कर भूला सा फिरता है।
मानव उसके ही कारण से, यों मोहकूप में गिरता है।

राधेश्याम कथावाचक के अनुज मदन मोहन शर्मा ने भी राधेश्यामी छन्दों में विभिन्न रचनायें रचना कीं। इनमें से एक है -

"जन्म क्यों व्यर्थ लिया, सरकार ?
लिया जन्म ही था तो जग का संकट देते टार
मधुर बाँसुरी बजा प्रेम की फैलाई गोआर।
फिर यह डायन फूट रही क्यों, बोलो नन्द कुमार ?
कंस और शिशुपाल के वध से, हरण हो गया भार ?
उनके तुल्य यहाँ फिरते हैं, कितने दैत्य अपार।
अन्न नहीं है, वस्त्र नहीं, छाये प्लेग बुखार।
"जन्माष्टमी' तुम्हारी का फिर, कैसे हो त्यौहार ?
नहीं हरा है भार भूमि का फिर से हो अवतार,
इसीलिये तक रहे एक हक, "मोहन" कारागार।[15,16]

झब्बी लाल मिश्र "हकीर' -

मुरादाबाद का नाम याद आते ही पिछली शताब्दी की अनेक संस्कृति टीकाएं, तंत्र शास्र के ग्रंथ और नाटक याद आने लगते हैं। इन तीनों ही विधाओं के लिये मुरादाबाद के विद्वानों की सेवाएं विशेष हैं। पं० झब्बीलाल मिश्र "हकीर" का जन्म मुरादाबाद के दीनदारपुरा मुहल्ले में सन् 1860 के लगभग हुआ था। सन् 1925 से पूर्व इनका निधन हो चुका था। हकीर जी उर्दू कवि के रुप में प्रसिद्ध रहे हैं। इनकी कविताओं को पं० बल्देव प्रसाद मिश्र ने अपने एक संग्रह "महामनमोहनी' में दिया है। हकीर जी "बुलबुल" और "प्रेमसखी" नाम से भी कविता करते थे। बुलबुल नाम से की गई अधिकांश कविताएं श्रृंगार परक हैं। गोपियों और कृष्ण की पनघट की छेड़छाड़ और ऊधो गोपियों के संवाद जैसे विषय ही मुख्य रुप से इन्होंने बुलबुल नाम से लिखे। "महामनमोहनी" के संग्रह से प्राप्त इनका राग जोगिया में दिया एक पद यहाँ भी दिया जा रहा है। इसमें एक नायिका अपने प्रियतम के परदेश जाने पर अपने दु:ख कहती है -

"आलीरी अब कैसे जिऊँगी
मेरे पिया परदेश सिधारे यह दुख कैसे भरूँगी।
मन में मेरे ऐसो आवै जहर का प्याला पिऊँगी।
कटारी खाय मरूँगी
तैन मुझे नित आन सतावै, विरहा अगन में जरूँगी
सुनीसेज डरावन लागी, मैं बैठी तडफूंगी
हाय मैं तो रो रो मरूँगी
फागुन के दिन आये संखीरी का संग होरी खेलूंगी
सब सखियां पिया के संग सोवत, मैं किसके गले लगूंगी
पिया पिया किससे कहूंगी

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

बुलबुल कहै त्याग के वस्तर अंगाविभूति मलूंगी
करमें ले तुलसी की माला पियको नाम जपूंगी जोगन को वेष करूँगी।

प्रेम सखी के नाम से भी कृष्ण भक्ति की कविताएं हकीर जी ने लिखी। इनकी हिन्दी कविताएं लोक साहित्य में रखे जाने योग्य हैं। उन्नीसवीं शती में जनरुचि की सरल रचनाएं रचने की अभिरुचि लगभग सभी कवियों में थी। भारतेन्दु ओर पं० प्रताप नारायण मिश्र ने ऐसी अनेक लोक रुचि की कविताएं लिखी, जिनका संग्रह "महामनमोहनी" में विशेष है। हकीर जी का एक बारहमासा देखें। इसमें गोपियां कृष्ण के विरह में डूबी ऊँधों से अपने बारह मासों का कष्ट बता रही हैं -

कातिक आया सजे सब मंदिर अगन लिपाय सखी चंदन से रे।
भई है न हरि विन दीपमालिका ब्रज में ब्रजवालन में रे।
यमुनाजल स्नान करतही ब्रजवनिता सब आगहनमें रे
इक दिन चीर है मनमोहन आय गये किस से छिन मरे।
पूष में रुष गये हरि जब से फिर नाहिं आये ब्रजवनितन में रे।
आप न आये अपने बदले में पठयों ऊँधों को योग वियोगन मेरे।
माघ वसंत धरै सब्रके शिर अतर अगावै सब वस्र मैं मेरे।
हमरों बसन्त हरो कब जाने मोहिलिये हरिसेनन में रे।
फगुआ फीको रंग लाले बिन उड़त गुलाल न ग्वालन में रे।
रोम रोय नयन भये पिचकारी होरी भई ऐसी फागुन मेरे।
वारह मास व्यतीत भये मन लाग रहो हरि दर्शन में रे।
प्रेम सखी की यही पर दीजौ राखिलेहुमोहि चरणन में रे।
छोड़ गयो हरि वारी उभर में मन की रही ऊधों मन में रे।

पं० झब्बीलाल मिश्र मुरादाबाद के प्रसिद्ध लेखक पं० कन्हैया लाल मिश्र के ताऊ थे। इनके पिता का नाम पंडित शिवदयाल मिश्र था। पं० झब्बीलाल जी ने सरल हिन्दी में कुछ काव्य रचे थे जो अपने समय में लोकप्रिय रहे। इनके द्वारा रचित लोक काव्यों में संगीत हीरापारी व लाल शहजादा, सब्जपारी महरु शहजादा, सनोवर परी व गुल शहजादा, परीरु व गुलरु, राजा परीक्षित, अधर जोगन आदि प्रमुख है।

इनकी रचना, "प्रेम सरिता' को वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई ने प्रकाशित किया था। सन् १९२६ में प्रकाशित "प्रेम सरिता' में दान लीला, गेंद लीला, मुरली लाल, रास पंचाध्यायी, मुकुर लीला, रुपधारण लीला, हिंडोर लीला, और उद्वव वृन्दावन गमन लीला नाम के आठ अध्याय हैं।[17,18] पूरे ग्रंथ में चौबीला छन्द का प्रयोग किया गया है एक चौबीला इस प्रकार है -

एक समय घनश्याम ने कियो मेरो सिंगार
निज करसों चोटी गुंथी मोतिन मांग संवार
मोतिन मांग संवार श्याम बैंदी बैना पहिराये
नाक बीच नथ और कान में करन फूल लटकाये,
ऊधों जी शिर औदनी उतार मुझे सारी पहिराई
उनहीं श्याम ने ऊधों हाथ भभूत पठाई
पहुँची हाथ पांच में नुपूर सुन्दर चीन चढ़ाए
उन्हीं श्याम माटी के मुद्रा ऊधों हाथ पठाये।

मिश्र जी ने "प्रेम सरिता' में गद्य का भी यत्र तत्र प्रयोग किया। भाषा का यह उदाहरण अपने में पर्याप्त रोचक है। यह पंडिताऊ भाषा पुराने संस्कृत के टीकाकारों द्वारा प्रयोग में लाई जाती थी। एक अंश देखें -

"ऐसे कहि श्री कृष्णचन्द्र वृषभान सुता को साथ ले अंतर्धान भये और एक वृन्दावन की कुंज में जाय पतन को बिछौना कर श्री राधा सहित विश्राम कियों फिर राधिकासों हरि कही कि, हे प्यारी। मैं तेरो श्रृंगार करूँ। यह कहकर फिर श्रृंगार करने को उपस्थित भये और जब प्रथम चोटी गुहन बैठे तब प्यारी के मुख देखन में अंतर हुआ। इससे हरि व्याकुल हो गये। तब प्यारी प्रीतम को विकल जान दपंण अपने हाथ में लिया और अपने चन्द्रमुख हरि को दिखायों। फिर हरि प्रियों को देखिवे लगे।"

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

5. नारायण दास पाराशरी "शोला' :

बदायूँ के लोक कवियों में पं० नारायणदास पाराशरी जी प्रसिद्ध रहे हैं। ये कविता में अपना नाम "शोला' लिखते थे। शोला जी द्वारा रचित रामायण गाँव-गाँव में प्रचलित रही है। "शोला" जी की रची हुयी आला खड़ी बोली में थी, जिस पर बदायूँनी भाषा का पूरा-पूरा प्रभाव था। इनके समकालीन अन्य कवि मुंशी त्रिलोक चंद, मुंशी दयाशंकर, पं० खैराती लाल "निंदा', ठाकुरी सिंह "अख्तर' और मुंशी कल्याण राय आदि थे।

पं० राम गुलाम मिश्र जो कि पाराशरी जी के ही समकालीन थे, ने ये पंक्तियाँ शोला जी के बारे में लिखीं -

"बानी रस सानी सुनि शारदा सिंहानी
इस सृष्टि की कहानी चौबोला में वखानी है
काव्य रस प्यासे जो फिरत हैं निरासे
पी कविता के बताशे बुद्धि, तिनकी छबानी है
कविवर अनमोला प्रथम गावै बंभोला रामा
गुणचौबोला करि मुक्ति की निसानी है।
कृपा करै भोला और जीवै शौला
देखि इनके चौबोला बुद्धि कबिनु की बिकानी है।

6. लालदास :

लालदास जी बाँस बरेली के कवि थे, हांलाँकि बाँस बरेली के लाल दास के बारे में ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है, किन्तु भरत की बारामासी के अंतिम छंद में उनकी सामान्य चर्चा है-

"नब्बे साल लोंद की भादों
अगहन गहन परयो
बांस बरेली के लाल दास ने
राम नाम उचर यो
भरत की यह बारामासी
गावैं सुनें परम् पद पावैं
कहे यम की फांसी
वैदहि मिलि ऐसे ही गाई
करम लेख नहीं मिटे
करां कोई लाखन चतुराई।

लालदास की "बारहमासा भरत का" नामक रचना सन् 1870 में बरेली से प्रकाशित हुई थी जिसकी एक प्रति "इंडिया हाउस" लन्दन में सुरक्षित है। यहाँ इसकी दो प्रतियां उपलब्ध हैं। पहली प्रति में 8 पृष्ठ हैं और वह लीथो पद्धति से मतबअ जहांगीरी में छपी थी। दूसरी प्रति मुल्ताजमल प्रिंटग प्रेस नीमच से प्रकाशित "बड़ा सूर्य पुराण" में है। इसका रचना काल सन् 1833 है।

इस जन कवि की छंद योजना भी उत्तम श्रेणी की है। यहाँ उसे सम्पूर्ण दिया जा रहा है-

"चैत पीछले पाख राम नौमी को जन्म लियो,
अवधपुरी सुख धाम सखिन मिलि मंगल चार कियो
खबर जब दशरथ ने पाई,
दिये दान गज वाज गऊ दिन थोरे की ई
सभा सब प्रफुलित व्हे आई
कर्म लिखी जा मिटै करो कोई लाखो चतुराई

लागत ही वैशाख केतकी वावरि करि डारी
भरत कहै धृक हमरो भई जब तुम सी महतारी

दु:ख सब नगरी को दीये,

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

तीन लोक के नाथ राम तैने वन वासी कीये
कूरमति कैसी वनि आई
कर्म लिखी न मिटे करो कोई लाखो चतुराई

जैठ जुरे सब पंच भरत को गद्दी बैठारो
भरत धरत कानन पै हाथ नाथ मोहि गरदन क्यों मारो
सरे जहिं इन वातज काजा
तीन लोक के नाथ नाम वे अयुध्या के राजा
बात यह सबके मन भाई[19]
कर्म लिखी ना मिटे करो कोई लाखे चतुराई"

7. पंडित जोगेश्वर प्रसाद :

जोगेश्वर प्रसाद जी चन्दौसी में होने वाली कवि गोष्ठियों में नियमित भाग लेते थे और यहाँ पर दी जानी वाली समस्याओं की पूर्ति करते थे। पं० जोगेश्वर प्रसाद कृत एक छंद -

"काम की जो पाई देह रामनाम ही के हेतु
रतन लगावे अब क्यों न हरिनाम की
नाम रटन ही ते कलेश दु:ख भाग जाय
प्राप्त हो तोय खानि अमित आराम की।
राम की कृपालुता से भव सिन्धु पार होय
सीधे तू पहुँचगाये शरण राम की
श्याम जी की जो छवि अभिराम न बिलौकी जोपै
व्यर्थ गयो जीवन तो ये आँखें कौन काम की।"

8. पंडित छोटे लाल दीक्षित "द्विज दास' :

ये भी चन्दौसी के प्रतिभाशाली कवि थे। पं० छोटे लाल दीक्षित के एक भाई कर्ण बास की दुष्टों के द्वारा गंगा में डुबोकर हत्या कर दी गई। दीक्षित जी की आत्मा को इस घटना से अपार कष्ट हुआ और उससे दु:खी होकर जो उन्होंने छंद रचे, वे साहित्य की निधि हैं। इनमें से कुछ छंद इस प्रकार हैं -

"मौन क्यों हो कर्णवास के निवासी सब
मेरी अरजी को नैक चित में धरो नहीं
"द्विज दास" आरत पुकारत है बार-बार
द्वार-द्वार डौले दीन दु:ख के हरो नहीं
अंध के सहारी प्राण धारो जैनारायण
कैसो गयो मारो सो बतावो सो डरो नहीं"
"कौन से कसाईन नसाई मोर आशा लता
माहिर सबै हो ताहि जाहिर करो नहीं
सिंह के सम्हारो खड्ग खप्पर त्रिशुधारी
वेगि ही पधारो द्विजदास प्रति पातिका
मौन क्यों सभी हो फिरि कौन पै फिराउ जाय
वेगि ही संहार करो शत्रु कुल सालिका
मारि-मारि दुष्टन के वंश निरवंश करो
राकहु वयै ना नरनारि बाल-बालिका
जौन-जौन जानि के हुबायो जै नारायण
तौब दुख देवा को कलेवा करो कालिका।"

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

9. श्री मन्नारायण :

श्री मन्नारायण चन्दौसी के प्रतिष्ठित और प्रतिभावान कवि रहे हैं। इनके अनेक कवि शिष्य भी थे। श्री मन्नारायण द्वारा रचित "संगीत सुदामा चरित्र" ग्रन्थ अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ, जिसमें कृष्णा की शोभा पर छंद लिख गए हैं -

"मारे पच्छवारो स्वच्छ माथे पे मुकुट सोहे
श्री मनु सु सोहे मन कुण्डल हिलोर है।
पति पर अंग लसे काछनी विचित्र करने
मन्द-मन्द हँसे चित चो बर जोर है।
अति छवि बारी अरी। गुजमाला न्यारी
चल देख उठ प्यारी। माल केसर की खारे है
मुख में तमोल मनो खूबी के खजाने खोल
ढाढ़ों नन्दजू की धौरि नन्द को किशोर हैं।

II. विचार-विमर्श

सामान्य जनों या आशुकवियों द्वारा मौखिक परम्परा के रुप में अभिव्यक्त साहित्य लोक साहित्य कहलाया. परिवेश के अनुसार उसकी अभिव्यक्ति विरह और मिलन दोनों रुपों में हुई है. नारी यों तो सृष्टि की वह रचना है जो प्रकृति के अनुरुप अपने को ढाल लेती है. जिसका जीवन कभी सुख के हिण्डोलों पर झूलता है जो कभी विरह की उर्मियों पर तैरता है. उसमें भी कुमाऊँ जो वीरों की भूमि रही है जहाँ की नारी डाकिये को प्रतीक्षारत रहकर प्रियतम के पत्र के स्नेहित शब्दों से अपने उफान को ठण्डा करती है. दुर्भेद्य पर्वत शिखरों में काम करती हुई जो चीड़ की सनसनी हवाओं को प्रियतम के पावों की आहट समझ बैठती है और कन्दराओं की प्रतिध्वनि को प्रियतम का उत्तर !

परम्पराओं एवं मर्यादाओं का दुशाला ओड़कर वह लोकलाज को मद्देनजर रखते हुए अपने यौवन को विरह की शय्या में अर्पित कर देती है. जहाँ खेतों में काम करते हुए घाम, पूष की लम्बी रातें, बिना आँगन का घर उसे प्रताड़ित करते हैं. वहीं लुप्या-लुप्या हौल, च्यूड़े-विरुड़े पर्वत शिखरों पर लगने वाले मेले उसे प्रियतम से संयोग होने की आशाएं दिलाते हैं.

नवेली! जिसका प्रियतम चन्द दिनों के मिलन के बाद सीमा में ड्यूटी पर चला गया हो, नया घर, माँ बाप भाई बहिन से दूर वह अकेली नितान्त अकेली मिट्टी में प्रियतम का चित्र खींचती हैं और स्वप्न में प्रियतम को पाकर उससे आलिङ्गन वद्ध हो जाती है. अपने तन को उसको समर्पित करते ही उसे मिलता है शून्य गगन! लोक गायकों के मुख से सुने हुए कुछ विरह के पदों को प्रस्तुत करते हुए मैं कुमाऊँनी नारी के विरह को प्रकाश में ला रहा हूँ.

कुमाऊँनी पतिव्रता नारी पर पुरुष के प्रेमपाश में नहीं बँधती हैं. वह रात और दिन अपने ही प्रियतम की आशा में समय व्यतीत करती है.

बेलि मेरी नींन टुटी फिनि खसरा ले.
रात काटी दिन काट्यो, तेरा आसरा ले..

विरह में उसे जड़ और चेतन का आभास तक नहीं हो पाता, वह ऊँचे पर्वत से कह बैठती है ओ पर्वतराज! तुम जरा नीचे हो जाओ मैं अपने प्रियतम को देख लूंगी.

ला दवात ला कलमा, मैं चिठी लेखूँछुं.
ऊँची डाना नीचा हैजा, मैं सुवा देखछुं..

अपने प्रियतम के प्रति विश्वास प्रकट करते हुए वह कहती है कि मैंने तो तुझ में घनी प्रीति लगा रखी है मगर तेरी प्रीति कहाँ है.[20]
धोगि बन सिदसिद, मूली बन धाँच.
मेरि माया तेरी तिर, तेरि माया काँछ.

अपने प्रिय के प्रति वह नाराजी का भाव किसी भी प्रकार से नहीं रखती है. कहती है तुम्हें मेरी माया होगी तो पत्र देना यदि पत्र नहीं भी दे पाओगे दिल में मेरे प्रति मेहरबानी तो कम से कम बनाये ही रखना.

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

चापाई का चार ठोका, छट्को मछानी.
माया होली चिट्ठी दिये, नदि मेहरबानी..

जिस जगह वह अपने प्रियतम के साथ कभी बैठी थी उसे उस स्थान से भी मोह हो गया है. वह उस जगह की मिट्टी को पवित्र समझकर उठा ले आई है.

साँइ को घोड़ो दाँण खाँछो, भुटिया भरै को.
माटो उचै खल्दि हालो, वैठिया ठौरै को...

दिन भर काम में व्यस्त रहने के कारण रात्रि में सोते ही नींद उसे अपने आगोश में ले लेती है परन्तु अर्धरात्रि में जब नींद खुलती है तो वह प्रियतम से स्वप्न में आने को कहती है.

त्वीले काटो मालू बेलि, मैंलि काटो ऊना.
दिन भेट नि हुँणकि, राति आये स्वीना.

हितकारी और मनोहर स्वप्न दुर्लभ तो होते ही हैं. प्रिय की कुशलता की खबर देने वाले के मुँह में मीठा घी भरा रहे, वह ऐसी कामना करती है.

सानण की हलिमाणी, क्वेरालु को जु छ.
सुवा की खबर दिया, त्यार मुखा ध्यु छ.

वह कहती है प्रियतम! तुम कहते हो आज आऊँगा कल आऊँगा आखिर कब आओगे. मेरी तो सारी उमर ऐसे ही बीत जायेगी.

काल्कुड़ी का काला बण, लागि गई कुमर.
ऐ घुलो ऐ ज़ैलो कँछ, बिति गे-उमर..

वन प्रान्तरों में काम करती हुई वह सोचती है आहो! मैं कब अपने प्रियतम को इन जंगलों में देखूंगी.

गाड़ की चिफलि दुङि, कै ढुडी टेकूँलो
पुतई जसो सुवा कणी कै डाना देखलो.

गाँवों में दुकानें दूर होने और प्रियतम के घर न होने के कारण माँग में भरने के लिए सिन्दूर भी समाप्त हो चुका है.

अस्कोट दिवालि गड़, सेठलि कमायो,
सिन्दुर पैरनी ख्वरा, विभूत रमायो...

चारपाई में अपने को अकेले पाकर वह यह कहे हुए बिना नहीं रुकतो अहो! तुम्हारे चले जाने के बाद में चारपाई में अकले लेटी हूँ.

सौकयानी ध्वैछी कपाड़ा, गंगज्यू घाट में.
सुवा त्वै जाइयाँ वटी, यकली खाट में...

प्रिय के बिना उसे पूरा घर उजाड़खाना लगता है. सारा मकान काट खाने को आता है.

ठुलिगाड़ लागी गोछ, सिल्यर बगान.
यकली घर में सुवा, काटि खाँछ मकान...

आकाश में पंछी को उड़ते देखकर वह भी इच्छा करती है कि मुझ पर भी पंख होते तो मैं भी उड़कर अपने प्रिय के पास चली जाती.

कलकाता जहाज उडो, रंगून डाकै की.
पंखा हना उडि जान्यूं मैं बिन फाकैं की...

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

मेघाच्छन्न आकाश उसे अतीत में छेड़छाड़ की याद दिलाये बिना नहीं रहते, वह प्रियतम से कह उठती है, प्रियतम ! या तो बादुली लगाकर इन बादलों को हटा दो या फिर तुम स्वयं आकर दर्शन दे जाओ.

सर्ग लाग्यो काला बादल, थिट्की लै मिटै दे.
कित दीजा दरसन, या बादल फिटै दे..

उसकी मिलन की आशाएं क्षीण होती जा रही हैं. वह कह बैठती है शायद तुम्हारे मेरे क्रीड़ा के क्षण अब लौटकर नहीं आयेंगे.

पार भटी भैसि को खर्क, भैंसि खाला की.
त्यार मेरा खैल्ल्या दीन, आजि फर्काला की...

प्रियतम के हाथों से लगाये गई फुलवारी में फूल आ चुके हैं फूलों की सुवासित गन्ध उसके यौवन तरंगों को बेगवान कर देती है, विरह में वह कहे बिना नहीं रहती

भोट्या ले बाकारा लाया, धार्चुला की झाड़ी.
कैका लिजी छाड़ी गेछ, लैंगी फुलवाड़ी...

विरह की ज्वाला को सहन करती हुई वह नारी अपनी प्रिय से प्रेमपाश में बँधकर मुझ पर ही आशक्त न होने के लिये कहती है कि प्रिय तुम अपना स्नेह मुझे देना लेकिन अपने माँ, बाप एवं गाँव को भूल मत जाना पत्र तो मेरे नाम से भेजना लेकिन मनीआर्डर घर के पते पर ही करना.

आदु माया मैंहुँ राखो, आदु माया गौं कि.
मनिआर्डर घर भेजे, चिठि म्यरा नौं कि.

वह अपने पति के साथ परदेश गमन के लिए जबरदस्ती नहीं करती है. प्रेमपूर्वक यह कहती है कि प्रिय! क्या तुम्हारे साथ आकर दोनों लोगों का भरणपोषण हो पायेगा.

घार में देबि के थानों, वुड़ छ पुज्यारो.
त्यार संग मैलेऊँछ्यो, होलो के गुजारो.

पति का जूठन खाने के लिए वह लालायित है और उसके कपड़ों को धोने के लिए उसे इन्तजार है.

तुमरि जुठी थाली में, कै दिन मैं खूलो.
आङ की लुकुड़ि सुवा, कै दिन मै धूलो...

III. परिणाम

किसी भी देश या भाषा के साहित्य की मजबूती उसके लोकसाहित्य पर टिकी होती है। लोक ही साहित्य का मूल आधार होता है; लोक से कटकर साहित्य अपनी आत्मा गँवा देता है। परिष्कृत साहित्य में यदि लोकचेतना न हो, लोक की अनुभूतियाँ न हों तो वह बौद्धिक जुगाली मात्र रह जाता है। लोकसाहित्य व्याकरण या प्रस्तुतिकरण में अमानकीकृत हो सकता है, किंतु अनुभूतियों एवं सहजता में अतुलनीय होता है। लोकभाषा का सोता अंदर से आता है और पूरा प्रभाव लेकर आता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो भोजपुरी भाषा एवं साहित्य बहुत ही समृद्ध और मनमोहक है, यह बात अलग है प्रगतिशीलता की दौड़ में बहुत सी अच्छी बातें पीछे छूट गई हैं।

समय के प्रवाह में न जाने कितने लोककवि विस्मृत हो गए या विस्मृत कर दिए गए। सभ्यता की चकाचौंध में मातृ भाषाएँ हीनताबोध पैदा करने लगीं; चटकारा साहित्य उदीयमान और प्रकाशमान होने लगा। भाषा को आर्थिक स्तर से जोड़कर देखा जाने लगा। भिखारी ठाकुर, भोलानाथ गहमरी, महेंदर मिसिर जैसे न जाने कितने ज्ञात-अज्ञात कवियों की भाषा भोजपुरी आज के लालची, अबोध और स्तरहीन कवि-गायकों के कारण अश्लीलता का पर्याय बनती जा रही है। ऐसी स्थिति में लोकसाहित्य कहाँ तक बच पाएगा, यह यक्षप्रश्न हमारे सामने खड़ा है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

लेकिन बीच-बीच में कुछ प्रयास आश्वस्ति दे जाते हैं। भोजपुरी लोकगायकी एवं लोकसाहित्य में बिरहा एक सशक्त विधा के रूप में स्थापित रहा है। बिरहा अर्थात विरहगीत। जब बिरहा की बात चलती है तो आज़मगढ़ के गायक-कवि बिसराम के बिना पूरी ही नहीं हो पाती। यह अलग बात है कि अल्पायु में दिवंगत और अलिखित होने के कारण बिसराम भी लगभग भुला दिए गए हैं। बिसराम की स्मृति को सजीव करने की आश्वस्ति लेकर जगदीश प्रसाद बरनवाल 'कुंद' की एक नाटिका 'बिरही बिसराम' प्रकाशित होकर आई है।
बिसराम एक ऐसे कवि थे जिनकी असमय मृत्यु पर महापंडित राहुल सांकृत्यायन तक का हृदय विदीर्ण हुआ था। उन्होंने अपने आख्यान में कहा था कि ऐसे कवि कभी-कभी पैदा होते हैं। लोकसाहित्य पर राजधानी में बैठे शोधकों, आलोचकों और साहित्यकारों से शोध एवं लेख की उम्मीद तो की नहीं जानी चाहिए। इसकी जिम्मेदारी क्षेत्रीय साहित्य साधकों के कंधों पर स्वतः ही जाती है। ऐसे कवियों-कलाकारों के रचनाकर्म को समाज में ले आना साहित्य एवं बोलियों की बहुत बड़ी सेवा है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि लोककवि बिसराम के जीवन को लोक तक पहुँचाने के लिए आजमगढ़ के ही वरिष्ठ कवि-लेखक 'कुंद' जी ने बीड़ा उठाया। 'कुंद' जी की अनुशीलन शक्ति एवं सधी हुई प्रस्तुति से मैं परिचित हूँ। मौलिक साहित्य के अतिरिक्त 'कुंद' जी हिंदी साहित्य की समृद्धि के लिए अथक एवं प्रामाणिक कार्य किया है। 'विदेशी विद्वानों का हिंदी प्रेम', 'विदेशी विद्वानों की दृष्टि में हिंदी रचनाकार' तथा 'विदेशी विद्वानों का संस्कृत प्रेम' जैसे शोधग्रंथ अपनी प्रामाणिकता, अनुशीलन एवं भाषा-शैली में अद्वितीय हैं। ऐसे लेखक द्वारा अज्ञातनाम बिरही कवि बिसराम के जीवन एवं काव्य को प्रकाश में लाने का 'कुंद' जी का प्रयास स्तुत्य है।

'बिरही बिसराम' लघुनाटिका के प्रारंभ में स्वयं लेखक द्वारा लिखित अपनी बात और 'बिरहों में बसे लोककवि बिसराम' अपने आप में एक निष्पक्ष समीक्षा है। इसी लेख में 'कुंद' जी बिसराम के विषय में लगभग सबकुछ कह देते हैं । बाद में प्रस्तुत नाटिका तो बिसराम के जीवन एवं बिरहों पर प्रकाश डालने का एक रोचक माध्यम भर है।[18,19,20] बिसराम के जीवन के दुख को उनके बिरहों से जोड़कर लेखक ने सब कुछ बता दिया है।

कुछ कमी रह जाती तो उसे मैथिली-भोजपुरी अकादमी दिल्ली के पूर्व सचिव तथा निबंधकार परिचय दास जी की भूमिका ने पूरा कर दिया है। परिचय दास जी बिसराम के लोककाव्य के साथ न्याय करते हुए भूमिका भोजपुरी में लिखते हैं। ऐसा लगता है कि पत्नी की मृत्यु से दुखी बिसराम की मानसिकता को परिचय दास जी उसी शिद्दत से अनुभव कर रहे हैं। किन परिस्थितियों में बिसराम का काव्य फूटता है, उनकी क्या मनोदशा होती है और वे अपनी मनोदशा का वर्णन ठेठ गँवई भाषा में कैसे करते है, इसका विवेचन परिचय दास जी ने बखूबी किया है।

कवि बिसराम के छोटे से दुखमय जीवन और उनकी प्राप्य लगभग 22 बिरहों को समेटे हुए 'कुंद' जी का एकांकी या लघुनाटिका 'बिरही बिसराम' बिसराम की ही भाषा आज़मगढ़ की भोजपुरी में ही लिखित है। भाषा का यह चुनाव संभवतः बिसराम की आत्मा का सुकून दे गया होगा। भोजपुरी के अनेक रूप हैं तथा उच्चारण के अलग-अलग बलाघात हैं। उनमें आजमगढ़-काशी की भोजपुरी सबसे अलग है। फिर भी भोजपुरी के सारे संस्करण सभी भोजपुरी भाषी समझ लेते हैं।

नाटक में न कोई ताम-झाम है और न किसी बड़े मंच प्रबंधन की माँग है। बिसराम, उनके दो मित्रों एवं उनकी बहन मेवाती के माध्यम से नाटक गति पकड़ता है। ये चरित्र पत्नी की मृत्यु के बाद बिसराम की मनोदशा एवं तज्जन्य उनके बिरहा काव्य से लोक को परिचित कराते हैं। बिसराम के पिता, उनकी भाभी, पत्नी एवं वैद्य के चरित्र केवल परिस्थितियों के चित्रण के लिए आए हैं। इस छोटे से सादे नाटक में दृश्यों की कल्पना बहुत सहज ढंग से की गई है। पत्नी की मृत्यु से पूर्व बिसराम का बिरहा दंगल जीतना और पत्नी से विछोह के बाद उनका विरह विक्षिप्त हो जाना उनकी संवेदनशीलता एवं प्रेम के आदर्श को स्थापित करता है। संवादों में प्रयुक्त खाँटी आज़मगढी बोली जैसे बिसराम के समाज को जीवित कर देती है। टौंस को टँवसिया के रूप में उच्चारित करना बहुत आत्मीय लगता है। दिया दिवारी, महिन्ना, चिरई-चिरंगुल जैसे ग्रामीण शब्द भी बिसराम के बिरहों की भाषा से जोड़ते हैं।

नाटक में बिसराम के उपलब्ध सभी बिरहों को पिरोया गया है। अपनी भूमिका में तथा सूत्रधारों के संवाद में भी इस ओर ध्यान खींचा गया है कि इस में बिसराम के सभी बिरहों को दिया गया है जिससे वह आमजन तक पहुँच सके। यदि इन बिरहों को न दिया जाता तो दर्शक उनके बिरहों से वंचित ही रह जाता है। वस्तुतः बिसराम का जीवन ऐसा नहीं था जिससे आमजन प्रभावित हो जाए। न जाने कितने लोग कम उम्र में विधुर हो जाते हैं। बिसराम की विशिष्टता यही थी कि उन्होंने अपने विरह को मर्मस्पर्शी गीतों में ढाल दिया। उनके बिरहों को डालने से नाटिका प्रभावपूर्ण ही नहीं, उपयोगी भी हो गई है।

बिसराम के बिरहों को देखकर कहा जा सकता है कि वे अनुभूति एवं संवेदनशीलता के कवि थे। पत्नी के विरह में उनका काव्य स्वतः फूटा है। उसमें आँखों से देखा गया बिंब है और हृदय से आते शब्दों का प्रवाह है। कवि होने के लिए मनुष्य का पढ़ा-लिखा होना जरूरी नहीं है। यह बात तो और भी खास है कि साहित्य की किंचित जानकारी के बिना उन्होंने वह सब लिखा जो साहित्य में होना

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 3, March 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1303294 |

चाहिए। न जाने कितनी उपमाएँ उनके गीत में झर-झर झरती हैं। जगह-जगह अनजाने ही अलंकारों का प्रयोग हो जाता है। प्रकृति के वर्णन में भी उनका काव्य कमतर नहीं है। एक बिरहे में वे कहते हैं-

मिटि गइलैं साँझ केरी चढ़लि जवनियाँ
जइसे मिटे गरमी में तलवा क पनियाँ।

IV. निष्कर्ष

सियार, कुचकुचवा, रेउवाँ का चिल्लाना, बादलों का उमड़-घुमड़कर आना और बिसराम की विरह व्यथा का बढ़ जाना बहुत स्वाभाविक है। यह सब देशिक और भाषिक सीमाओं से परे का सत्य है। उनके बिरहों से गुजरते हुए कई बार ऐसा लगता है मानो हम प्रसाद की 'आँसू' का अनगढ़ व्याकरणहीन अनुवाद पढ़ रहे हों। दोनों का दर्द एक जैसा और अभिव्यक्ति एक जैसी। पीड़ा की जाति अलग-अलग नहीं होती। एक बिरही ऐसा ही काव्य लिखेगा, चाहे वह बिरही बिसराम हो, प्रसाद हो या कोई अन्य। जब भी वियोग से ओत-प्रोत गीतों से गुज़रना होता है तो कवि सुमित्रानंदन पंत की प्रसिद्ध पंक्तियाँ 'वियोगी होगा पहला कवि आह से निकला होगा गान' बरबस ही आ बैठती हैं और अपनी सत्यता सिद्ध करने लगती हैं। बिसराम का विरहा गाया नहीं गया है, आँखों से चुपचाप बहा है।

भोजपुरी एक प्रवाहपूर्ण बोली है। बोली कोई भी हो, उसे बोलना जितना सहज होता है, लिखना एवं छपना उतना ही मुश्किल। मैं स्वयं भोजपुरी के लिखित रूप में सहज नहीं हो पाता; शायद यह मेरी कमजोरी हो। इस नाटिका में भोजपुरी का बहुत सुंदर प्रयोग किया गया है किंतु छपाई में प्रकाशक या टाइपसेटर द्वारा 'नासमझी' की बहुत सी गलतियाँ की गई हैं। परिचय दास जी की भूमिका में ऐसी त्रुटियां खटकती हैं। [20]

संदर्भ

1. Eugenio, Damiana (2007). Philippine Folk Literature: An Anthology. Quezon City: The University of the Philippines Press. पपृ° xxiii. आई°एस°बी°एन° 9789715425360.
2. ↑ "Oral literature". Encyclopaedia Britannica.
3. "Religions Muslim" (PDF). Registrat General and Census Commissioner, भारत. मूल (PDF) से 23 मई 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2006-06-01.
4. ↑ Eugene M. Makar (2007). An American's Guide to Doing Business in India.
5. ↑ Bhāravi, kavi (2002). Bhāraviviracitam Kirātārjunīyam. Kṛṣṇadāsa Akādamī,.
6. ↑ Kaivan Munshi and Mark Rosenzweig (2005). "Why is Mobility in India so Low? Social Insurance, Inequality, and Growth" (PDF). मूल से 4 मार्च 2009 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 8 जून 2009.
7. ↑ फ्रांसिस बुकानन, भारतीय जनगणना रिकार्ड, १८८३
8. ↑ बीबीसी पार्श्वक Archived 2012-02-02 at the वेबैक मशीन, भारत
9. ↑ "बीबीसी, धर्म और नैतिकता, हिंदू धर्म". मूल से 28 अक्तूबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 अक्तूबर 2006.
10. ↑ Bayly, Susan (1999). Caste, Society and Politics in India from the Eighteenth Century to the Modern Age. Cambridge University Press. डीओआइ:10.2277/0521264340. ISBN 978-0-521-26434-1. मूल से 13 अक्तूबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 जून 2009. नामालूम प्राचल |month= की उपेक्षा की गयी (मदद)
11. ↑ "Caste-Based Parties". मूल से 12 अक्तूबर 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2007-05-17.
12. ↑ "ब्राह्मण."विश्वकोश ब्रिटानिका.२००८ ब्रिटैनिका विश्वकोश ऑनलाइन.
13. ↑ http://www.jamaica-gleaner.com/gleaner/20050215/life/life1.html Archived 2008-12-04 at the वेबैक मशीन कीशा शेक्सपियर की प्रेम बनाम तयशुदा शादी
14. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 26 मई 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 जून 2009.
15. ↑ http://www.divorcerate.org/divorce-rate-in-india.htmlभारत[मृत कड़ियाँ] में तलाकदर
16. ↑ http://www.telegraph.co.uk/news/worldnews/asia/india/1499679/Divorce-soars-in-India's-middle-class.htmlभारतीय[मृत कड़ियाँ] मध्यवर्ग में तलाक के मामले बढ़ रहे हैं
17. ↑ "बीबीसी समाचार | दक्षिण एशिया |भारत में बाल विवाह". मूल से 5 मई 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 जून 2009.
18. ↑ "संग्रहीत प्रति" (PDF). मूल से 19 जून 2009 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 8 जून 2009.
19. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 15 जून 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 जून 2009.
20. ↑ Kalyani Menon-Sen, A. K. Shiva Kumar (2001). "Women in India: How Free? How Equal?". संयुक्त राष्ट्र. मूल से 11 सितंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2006-12-24.

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

Scan to save the contact details